ग्राम-नगर उपांत (Short Answer)

Dr. Sandip Sagar

ग्राम-नगर उपांत के बारे में:

नगर बस्तियों के चारोओर के क्षेत्र जो न तो नगरीय हैं और न ही ग्रामीण होती हैं, ग्राम-नगर उपांत कहलाते हैं।

ग्राम-नगर उपांत शहरी और ग्रामीण बस्तियों का संक्रमण क्षेत्र (या अभिसरण क्षेत्र) है।

नगरीय बस्तियों और ग्रामीण बस्तियों के बीच की भूमि को ग्राम-नगर उपांत कहा जाता है।

शहर में उच्च प्रदूषण के कारण लोगों को ग्राम-नगर उपांत क्षेत्र में बसने के लिए मजबूर करता है।

कुछ विशेष उद्योग जैसे जल शोधन संयंत्र ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों में पानी की आपूर्ति करने के लिए यहां लयाए जाते हैं।

यह क्षेत्र सब्जियों, फलों और फूलों की फसलों जैसे बागवानी कृषि के लिए पसंद किया जाता है; क्योकि शहरी बाजार में इनकी मांग हैं जो इस प्रकार की खेती के लिए लाभदायक है।

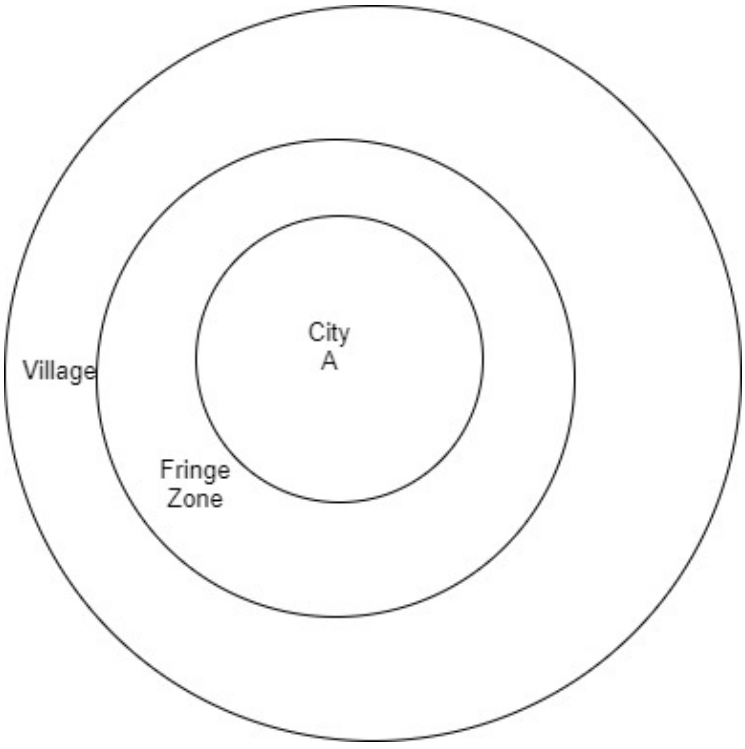

ग्राम-नगर उपांत की विशेषताएं निम्नलिखित हैं:

यह क्षेत्र आंशिक रूप से ग्रामीण और आंशिक रूप से शहरी क्षेत्र होता है।

इसमें गांव और शहर की दोनों विशेषताएं होती हैं।

इन क्षेत्रों में, खेतों का आकार छोटा होता है, और गहन फसल खेती का पालन किया जाता है।

इस क्षेत्र से, समुदाय दैनिक जरूरतों के लिए और कृषि उत्पादों को बेचने के लिए शहरी क्षेत्रों में जाते हैं।

इस क्षेत्र में शहर की सभी सेवाएं उपलब्ध नहीं होते हैं।

इन क्षेत्रों में, लिंगानुपात शहरी क्षेत्रों की तुलना में अधिक होती है लेकिन ग्रामीण क्षेत्र की तुलना में कम है।

इन क्षेत्रों में, साक्षतरता दर ग्रामीण से अच्छी लेकिन शहरी क्षेत्रो से अच्छी नहीं होती हैं।

प्रजनन दर ग्रामीण क्षेत्र की तुलना में कम होती है।

घर के क्षेत्र ग्रामीण घरों से छोटे और शहरी घरों से बड़े होते हैं

यह क्षेत्र प्रकृति में गतिशील है और इस क्षेत्र की सीमाओं का सीमांकन करना कठिन है।

अर्ध-रूढ़िवादी समाज यहाँ पाया जाता है।

समय के साथ, इस क्षेत्र में उपग्रह कस्बों का विकास होता है।

ग्राम-नगर उपांत के परिसीमन के तरीके:

ग्राम-नगर उपांत की सीमा का सीमांकन कोई आसान काम नहीं है क्योंकि यह एक गतिशील क्षेत्र है और हर साल इस क्षेत्र के क्षेत्रों में परिवर्तन होता है।

हालाँकि, ग्राम-नगर उपांत के परिसीमन के दो तरीके हैं:

- अनुभवजन्य विधि [Empirical method]
- प्रवाह विश्लेषण विधि [flow analysis method]

अनुभवजन्य विधि:

अनुभवजन्य विधि बहुत ही पारंपरिक विधि है और सीमाओं का सीमांकन निम्नलिखित आंकड़ों के आधार पर प्रत्यक्ष अवलोकन द्वारा किया जाता है:

- भूमि उपयोग परिवर्तन
- व्यवसाय संरचना
- सड़कों, स्कूलों, अस्पतालों आदि जैसे बुनियादी ढांचे की उपलब्धता।
- साक्षरता दर और लिंगानुपात जैसी सामाजिक-आर्थिक विशेषता।

ग्राम-नगर उपांत उपरोक्त मानदंडों से ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों से भिन्न है, इसलिए इसका उपयोग ग्रामीण-शहरी सीमा की सीमाओं के सीमांकन के लिए किया जाता है।

प्रवाह विश्लेषण विधि:

प्रवाह विश्लेषण पद्धति का उपयोग ग्राम-नगर उपांत की सीमाओं का सीमांकन करने के लिए किया गया था। नगर से जैसे ही ग्राम-नगर उपांत में प्रवेश करते है भूमि उपयोग और बुनियादी ढांचे (अस्पताल, स्कूल, सड़क आदि) जैसी कुछ सुविधाओं की तीव्रता में तेजी से कमी आती है। ग्राम-नगर उपांत सीमा की शुरुआत में इन आधुनिक सुविधाओं की तीव्रता में तेजी से गिरावट आती है और जब ग्राम-नगर उपांत की सीमा समाप्त होती है, तो सुविधाओं की तीव्रता ग्रामीण बस्ती की तरह पाई जाती है।